मौका-ए-दस्तूर

मौका जन्मदिन का, सब दिन से अलग, है प्राप्त
इसे विशेष दर्जा, और दिन का दस्तूर भी कहता,
भूली बिसरी यादें टटोलने, नए आयाम खोजते हुए
लक्ष्यों को गति देते हुए, मुकाम हासिल करना।
सफलता की सीढ़ी पर चढ़ते देख, खुशी के उस पल में, आंसुओं का छलकना,
कामयाबी का जश्न, गर्वित होने के अनुभव की हकीकत को, बशर्ते है दर्शाता,
हर पद, नई चुनौतियों से होता भरा, पर जिम्मेदारियां निभाने में हो तुम निपुण ,
रास्ते सरल न सुगम थे, मेहनत व लगन से स्वयं है बनाए, गर्व है हमें तुम पर,
प्रमोशन हासिल, है नतीजा उस दृढ़ संकल्प का, कुछ नया कर दिखाने की ललक,
पहचान अपनी खुद है बनाई, शान हमारी है बढ़ाई, रहे ईश्वर का हाथ तुम पर,
अपने लक्ष्य और सपने कभी न भूलना, पूरे उन्हीं के होगे, जो हर पल देखते ,
सच्चाई, रिश्तों में ईमानदारी, बखूबी तुम निभाते, आँखों से भाव की है समझ,
यही खूबी है सबसे अलग, भावनाओं की कद्र, उदारता पहल, की हो तुम मिसाल,
हमारे जीवन भर की पूंजी हो तुम, परिवार साथ खड़े देख, नाज सब को कराता,
इस पड़ाव में हर खुशी, हर एक वजह, शुरू है तुम से, हमारे जीने की वजह,
हासिल यूँ ही करो तुम सफलता, भरा रहे जीवन खुशियों से, सब का आशीर्वाद।

गीतांजलि सक्सेना 2022